राजनीति के उदारवादी दृष्टिकोण

उदारवाद का आरंभ यूरोप में 17वीं सदी के आस-पास हुआ। जब अत्यंत वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण उत्पादन की औद्योगिक प्रणाली की शुरुआत हो रही थी। धर्म के क्षेत्र में पोप की सत्ता को चुनौती दी जा रही थी। नये देशों की खोज के कारण वाणिज्य-व्यापार बढ़ता जा रहा था और सामन्तवादी व्यवस्था टूटने लगी थी। उदारवाद का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में इन विचारों को बढ़ावा देना था जो पूँजीवाद की स्थापना में सहायक सिद्ध हो। आरंभिक उदारवाद में 'व्यक्ति' को सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का केन्द्र मान कर 'व्यक्तिवाद' को बढ़ावा दिया गया। इसमें जॉन लॉक, एडम स्मिथ, जरमी बेंथम, जॉन मिल इत्यादि का विशेष योगदान रहा है। समकालीन उदारवाद में भिन्न भिन्न समूहों को सामाजिक जीवन का केन्द्र माना जाता है। इस प्रकार अब व्यक्तिवाद की जगह 'बहुलवाद' को महत्व दिया जाने लगा।

उदारवाद मुख्य रूप से बाजार समाज-व्यवस्था (Market society system) को मनुष्यों के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्धों का आदर्श मानता है। पुराने उदारवाद के अन्तर्गत बाजार की 'मुक्त प्रतिस्पर्द्धा' (Free-Competition) पर बल दिया जाता था। परन्तु समकालीन उदारवाद मुख्यत: 'नियंत्रित बाजार व्यवस्था' (Regulated Market system) के आदर्श को स्वीकार करता है। अत: वह कल्याणकारी राज्य का समर्थक बन गया है।

राजनीति के उदारवादी दृष्टिकोण की प्रमुख मान्यताएँ निम्न प्रकार हैं:

राजनीति समूहों की गतिविधि है (Politics is a group activity) - राजनीति का उदारवादी

दृष्टिकोण समाज के बहुलवादी दृष्टिकोण का समर्थन करता है। इसके अनुसार विभिन्न व्यक्ति विभिन्न समूहों के सदस्यों के रूप में अपने अपने हितों की देख रेख करते हैं। अतः समाज में बहुत सारे समूह बन जाते हैं, जो कुछ न कुछ संगठित होते हैं। ये समूह अपने प्रतिस्पर्धी समूहों के हितों के विरुद्ध अपने अपने सदस्यों के हितों को बढ़ावा देने की कोशिश करते हैं। इन्हें हित समूह कहा जाता है। इन परस्पर विरोधी हितों के टकराव से ही आगे चलकर राजनीति का जन्म होता है।

<u>राजनीति मे आधिकारिक सत्ता का प्रयोग होता है</u>- (Politics involves use of Authority) राजनीति मे विभिन्न समूहों की परस्पर विरोधी मांगो का समाधान ढूंढने के लिए ऐसी नीतियाँ, कानून बनाए जाते हैं, जो इन समूहों को मान्य हो या कम से कम वे उनका पालन करने को तैयार हो। यह सच है कि इनके सब समूहो की सब माँगे पूरी नहीं हो जाती, परन्तु जन साधारण को यह विश्वास होना चाहिए कि ये कानून उचित अधिकारियो के द्वारा उचित रीति से बनाये गये हैं। और उनमें सबके हितों का ध्यान रखा गया है। ऐसा विश्वास होने पर लोग अपने मन से कानून का पालन करेंगे। फिर भी इन कानूनो को पूरी तरह लागू करने के लिए सरकार के पास शक्ति का होना जरूरी है। उदाहरण के लिए, यातायात ~~के~~ की सुविधा के लिए नियम बनाये जाते हैं, संकेत लगाये जाते हैं। साधारणतः लोग अपने आप इस व्यवस्था का पालन करते हैं, परन्तु नियमो और संकेतो का उल्लंघन करने वाले को पकड़कर दंड दिलवाने के लिए यातायात पुलिस की व्यवस्था की जाती है। इस तरह आधिकारिक सत्ता के प्रयोग से ही राजनीति का कार्य सार्थक होता है।

<u>राजनीति परस्पर विरोधी हितों में सामंजस्य का साधन है</u> (Politics is an intrument of conciliating the conflicting interest)— उदारवादी दृष्टिकोण के अनुसार आधिकारिक सत्ता का द्वारा बल का प्रयोग किसी वर्ग पर दूसरे की इच्छा को थोपने के लिए नहीं किया जाता, बल्कि यह ऐसी इच्छा को

Scanned with CamScanner